



?????? ??????

13 Mar 2007

05:14 AM

Patan

Model: Web-MyKundli

Order No: 121345501

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: स्त्रीलिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 12-13/03/2007  
दिन \_\_\_\_\_: सोम-मंगलवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 05:14:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 57:49:47 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Patan  
राज्य \_\_\_\_\_: Bihar  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 24:14:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 84:12:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: 00:06:48 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 05:20:48 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:09:54 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 16:41:45 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:06:05 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:00:28 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 11:54:24 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: वसन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 28:03:24 कुम्भ  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 10:00:31 कुम्भ

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: कुम्भ - शनि  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: धनु - गुरु  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: मूल - 3  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: केतु  
योग \_\_\_\_\_: व्यतिपात  
करण \_\_\_\_\_: तैतिल  
गण \_\_\_\_\_: राक्षस  
योनि \_\_\_\_\_: श्वान  
नाड़ी \_\_\_\_\_: आद्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: क्षत्रिय  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: मूषक  
युँजा \_\_\_\_\_: अन्त्य  
हंसक \_\_\_\_\_: अग्नि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: भा-भावना  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: स्वर्ण - ताम्र  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: मीन

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1928	फाल्गुन	22
पंजाबी	संवत : 2063	फाल्गुन	30
बंगाली	सन् : 1413	फाल्गुन	28
तमिल	संवत : 2063	मासी	29
केरल	कोल्लम : 1182	कुंभम	29
नेपाली	संवत : 2063	फाल्गुन	29
चैत्रादि	संवत : 2063	चैत्र	कृष्ण 9
कार्तिकादि	संवत : 2063	फाल्गुन	कृष्ण 9

### पंचांग

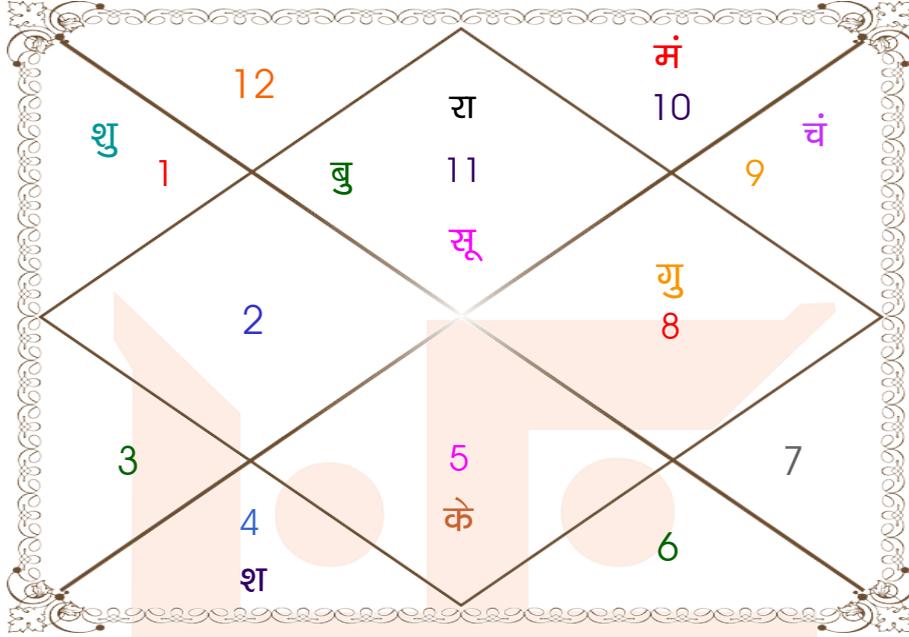
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 8  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 21:45:45  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 9  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : ज्येष्ठा  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 14:40:31 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : मूल  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : सिद्धि  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 24:58:28 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : व्यतिपात  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : बालव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 09:24:07 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : तैतिल  
भयात \_\_\_\_\_ : 36:23:42  
भभोग \_\_\_\_\_ : 62:23:36  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : केतु 2 वर्ष 11 मा 9 दि

### घात चक्र

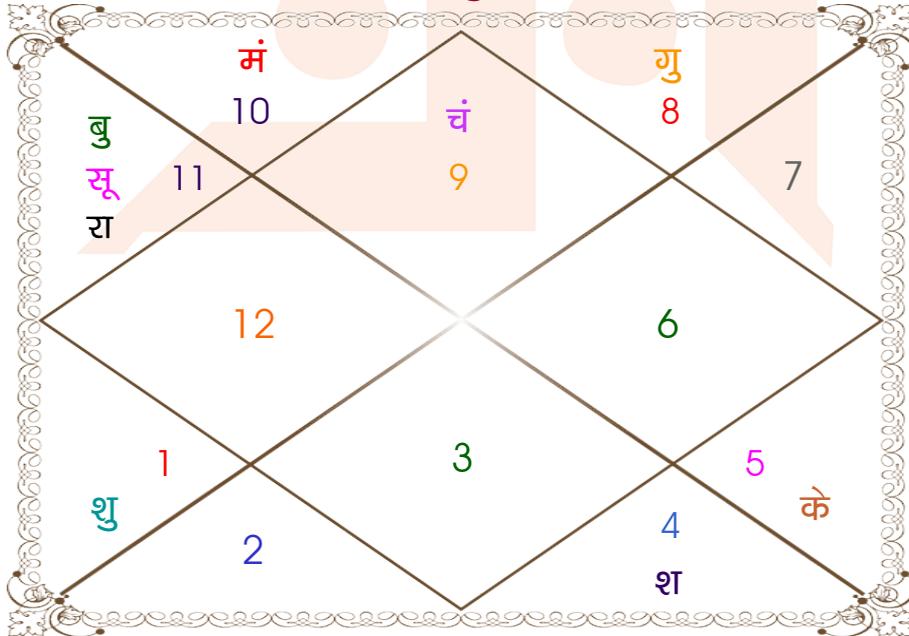
मास \_\_\_\_\_ : श्रावण  
तिथि \_\_\_\_\_ : 3-8-13  
दिन \_\_\_\_\_ : शुक्रवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : भरणी  
योग \_\_\_\_\_ : वज्र  
करण \_\_\_\_\_ : तैतिल  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मार्जार  
लग्न \_\_\_\_\_ : धनु  
सूर्य \_\_\_\_\_ : तुला  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : कन्या  
मंगल \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
बुध \_\_\_\_\_ : सिंह  
गुरु \_\_\_\_\_ : धनु  
शुक्र \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
शनि \_\_\_\_\_ : कन्या  
राहु \_\_\_\_\_ : कुम्भ

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुण्डली

	शु		
रा सू			श
मं			के
चं	गु		

### लग्न कुण्डली

	शु		रा सू
		ल	
श			मं
के			चं
		गु	

विंशोत्तरी  
केतु 2वर्ष 11मा 9दि  
केतु

13/03/2007

21/02/2123

केतु	19/02/2010
शुक्र	19/02/2030
सूर्य	20/02/2036
चन्द्र	19/02/2046
मंगल	19/02/2053
राहु	20/02/2071
गुरु	20/02/2087
शनि	20/02/2106
बुध	21/02/2123

योगिनी

उल्का 2वर्ष 6मा 8दि  
पिंगला

19/09/2025

19/09/2027

पिंगला	30/10/2025
धान्या	29/12/2025
भामरी	21/03/2026
भद्रिका	30/06/2026
उल्का	30/10/2026
सिद्धा	21/03/2027
संकटा	30/08/2027
मंगला	19/09/2027

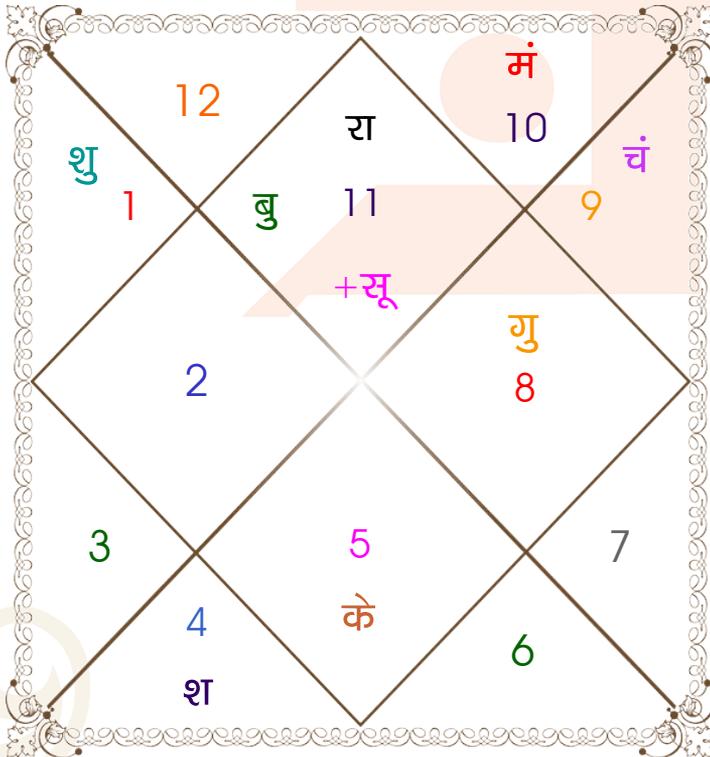
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	10:00:31	464:51:21	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	गुरु	---
सूर्य			कुंभ	28:03:24	00:59:53	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि
चंद्र			धनु	07:43:43	12:51:06	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	सम राशि
मंगल			मक	17:22:54	00:45:46	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	शनि	उच्च राशि
बुध			कुंभ	02:34:18	00:26:50	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	केतु	सम राशि
गुरु			वृश्चि	24:55:52	00:04:22	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	मित्र राशि
शुक्र			मेष	00:04:16	01:12:50	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	केतु	सम राशि
शनि	व		कर्क	25:25:49	00:03:41	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	शत्रु राशि
राहु			कुंभ	22:09:20	00:00:42	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	मित्र राशि
केतु			सिंह	22:09:20	00:00:42	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	शत्रु राशि
हर्ष			कुंभ	21:08:32	00:03:25	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	---
नेप			मक	26:43:17	00:02:01	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	गुरु	---
प्लूटो			धनु	04:54:35	00:00:37	मूल	2	19	गुरु	केतु	मंगल	---
दशम भाव			वृश्चि	17:59:09	--	ज्येष्ठा	--	18	मंगल	बुध	बुध	--

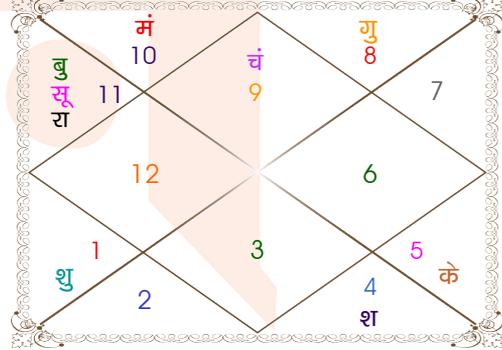
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:57:32

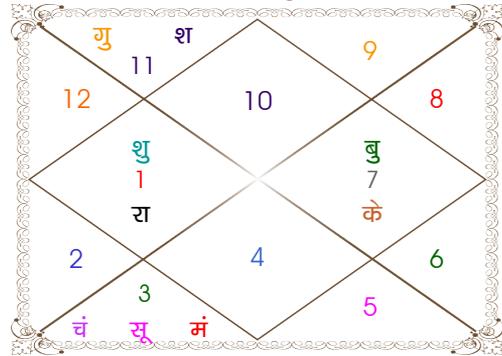
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मकर 26:20:17	कुम्भ 10:00:31
2	कुम्भ 26:20:17	मीन 12:40:04
3	मीन 28:59:50	मेष 15:19:36
4	वृष 01:39:23	वृष 17:59:09
5	मिथुन 01:39:23	मिथुन 15:19:36
6	मिथुन 28:59:50	कर्क 12:40:04
7	कर्क 26:20:17	सिंह 10:00:31
8	सिंह 26:20:17	कन्या 12:40:04
9	कन्या 28:59:50	तुला 15:19:36
10	वृश्चिक 01:39:23	वृश्चिक 17:59:09
11	धनु 01:39:23	धनु 15:19:36
12	धनु 28:59:50	मकर 12:40:04

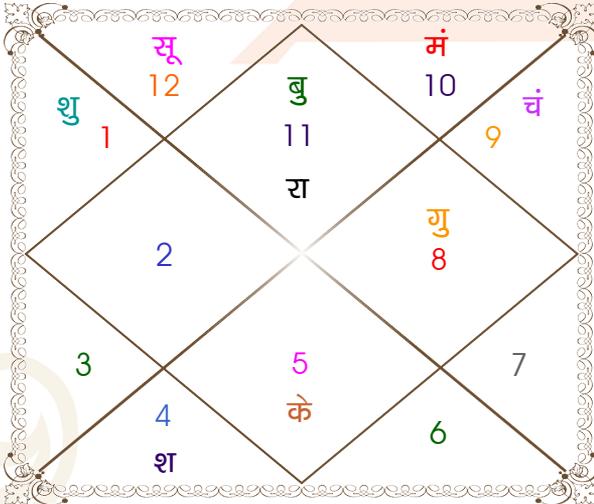
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ	10:00:31
2	मीन	19:04:20
3	मेष	21:29:46
4	वृष	17:59:09
5	मिथुन	12:12:19
6	कर्क	08:02:01
7	सिंह	10:00:31
8	कन्या	19:04:20
9	तुला	21:29:46
10	वृश्चिक	17:59:09
11	धनु	12:12:19
12	मकर	08:02:01

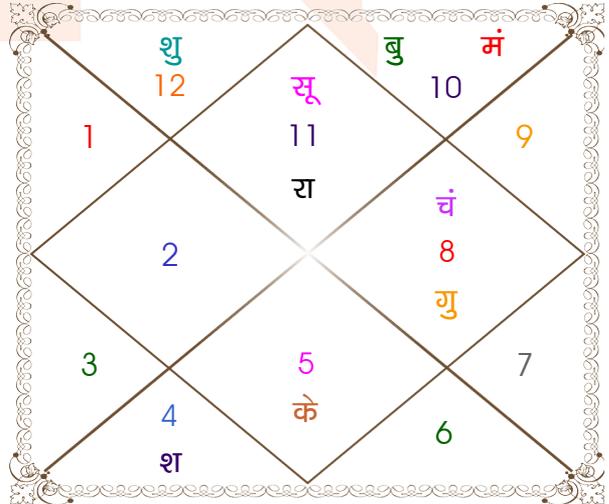
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

### भोग्य दशा काल : केतु 2 वर्ष 11 मास 9 दिन

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
13/03/2007	19/02/2010	19/02/2030	20/02/2036	19/02/2046
19/02/2010	19/02/2030	20/02/2036	19/02/2046	19/02/2053
00/00/0000	शुक्र 21/06/2013	सूर्य 09/06/2030	चंद्र 20/12/2036	मंगल 19/07/2046
00/00/0000	सूर्य 21/06/2014	चंद्र 09/12/2030	मंगल 21/07/2037	राहु 06/08/2047
00/00/0000	चंद्र 20/02/2016	मंगल 16/04/2031	राहु 20/01/2039	गुरु 12/07/2048
00/00/0000	मंगल 21/04/2017	राहु 09/03/2032	गुरु 21/05/2040	शनि 21/08/2049
00/00/0000	राहु 21/04/2020	गुरु 26/12/2032	शनि 21/12/2041	बुध 18/08/2050
13/03/2007	गुरु 21/12/2022	शनि 08/12/2033	बुध 22/05/2043	केतु 14/01/2051
गुरु 14/01/2008	शनि 19/02/2026	बुध 15/10/2034	केतु 21/12/2043	शुक्र 15/03/2052
शनि 22/02/2009	बुध 20/12/2028	केतु 20/02/2035	शुक्र 21/08/2045	सूर्य 21/07/2052
बुध 19/02/2010	केतु 19/02/2030	शुक्र 20/02/2036	सूर्य 19/02/2046	चंद्र 19/02/2053

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
19/02/2053	20/02/2071	20/02/2087	20/02/2106	21/02/2123
20/02/2071	20/02/2087	20/02/2106	21/02/2123	00/00/0000
राहु 02/11/2055	गुरु 09/04/2073	शनि 23/02/2090	बुध 19/07/2108	केतु 20/07/2123
गुरु 28/03/2058	शनि 21/10/2075	बुध 02/11/2092	केतु 16/07/2109	शुक्र 18/09/2124
शनि 01/02/2061	बुध 26/01/2078	केतु 11/12/2093	शुक्र 16/05/2112	सूर्य 24/01/2125
बुध 21/08/2063	केतु 02/01/2079	शुक्र 10/02/2097	सूर्य 23/03/2113	चंद्र 25/08/2125
केतु 08/09/2064	शुक्र 02/09/2081	सूर्य 23/01/2098	चंद्र 22/08/2114	मंगल 21/01/2126
शुक्र 09/09/2067	सूर्य 21/06/2082	चंद्र 24/08/2099	मंगल 19/08/2115	राहु 09/02/2127
सूर्य 02/08/2068	चंद्र 21/10/2083	मंगल 03/10/2100	राहु 08/03/2118	गुरु 14/03/2127
चंद्र 01/02/2070	मंगल 26/09/2084	राहु 10/08/2103	गुरु 13/06/2120	00/00/0000
मंगल 20/02/2071	राहु 20/02/2087	गुरु 20/02/2106	शनि 21/02/2123	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 2 वर्ष 11 मा 0 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>शुक्र - बुध</b> 19/02/2026 20/12/2028	<b>शुक्र - केतु</b> 20/12/2028 19/02/2030	<b>सूर्य - सूर्य</b> 19/02/2030 09/06/2030	<b>सूर्य - चंद्र</b> 09/06/2030 09/12/2030	<b>सूर्य - मंगल</b> 09/12/2030 16/04/2031
बुध 16/07/2026 केतु 14/09/2026 शुक्र 06/03/2027 सूर्य 27/04/2027 चंद्र 22/07/2027 मंगल 20/09/2027 राहु 23/02/2028 गुरु 09/07/2028 शनि 20/12/2028	केतु 14/01/2029 शुक्र 26/03/2029 सूर्य 17/04/2029 चंद्र 22/05/2029 मंगल 16/06/2029 राहु 19/08/2029 गुरु 15/10/2029 शनि 21/12/2029 बुध 19/02/2030	सूर्य 25/02/2030 चंद्र 06/03/2030 मंगल 12/03/2030 राहु 29/03/2030 गुरु 13/04/2030 शनि 30/04/2030 बुध 15/05/2030 केतु 22/05/2030 शुक्र 09/06/2030	चंद्र 24/06/2030 मंगल 05/07/2030 राहु 01/08/2030 गुरु 26/08/2030 शनि 24/09/2030 बुध 19/10/2030 केतु 30/10/2030 शुक्र 30/11/2030 सूर्य 09/12/2030	मंगल 16/12/2030 राहु 04/01/2031 गुरु 21/01/2031 शनि 11/02/2031 बुध 01/03/2031 केतु 08/03/2031 शुक्र 29/03/2031 सूर्य 05/04/2031 चंद्र 16/04/2031
<b>सूर्य - राहु</b> 16/04/2031 09/03/2032	<b>सूर्य - गुरु</b> 09/03/2032 26/12/2032	<b>सूर्य - शनि</b> 26/12/2032 08/12/2033	<b>सूर्य - बुध</b> 08/12/2033 15/10/2034	<b>सूर्य - केतु</b> 15/10/2034 20/02/2035
राहु 04/06/2031 गुरु 18/07/2031 शनि 08/09/2031 बुध 24/10/2031 केतु 12/11/2031 शुक्र 06/01/2032 सूर्य 23/01/2032 चंद्र 19/02/2032 मंगल 09/03/2032	गुरु 17/04/2032 शनि 02/06/2032 बुध 14/07/2032 केतु 31/07/2032 शुक्र 18/09/2032 सूर्य 02/10/2032 चंद्र 27/10/2032 मंगल 13/11/2032 राहु 26/12/2032	शनि 19/02/2033 बुध 10/04/2033 केतु 30/04/2033 शुक्र 27/06/2033 सूर्य 14/07/2033 चंद्र 12/08/2033 मंगल 01/09/2033 राहु 23/10/2033 गुरु 08/12/2033	बुध 21/01/2034 केतु 09/02/2034 शुक्र 01/04/2034 सूर्य 17/04/2034 चंद्र 13/05/2034 मंगल 31/05/2034 राहु 16/07/2034 गुरु 27/08/2034 शनि 15/10/2034	केतु 22/10/2034 शुक्र 13/11/2034 सूर्य 19/11/2034 चंद्र 30/11/2034 मंगल 07/12/2034 राहु 26/12/2034 गुरु 12/01/2035 शनि 02/02/2035 बुध 20/02/2035
<b>सूर्य - शुक्र</b> 20/02/2035 20/02/2036	<b>चंद्र - चंद्र</b> 20/02/2036 20/12/2036	<b>चंद्र - मंगल</b> 20/12/2036 21/07/2037	<b>चंद्र - राहु</b> 21/07/2037 20/01/2039	<b>चंद्र - गुरु</b> 20/01/2039 21/05/2040
शुक्र 22/04/2035 सूर्य 10/05/2035 चंद्र 09/06/2035 मंगल 01/07/2035 राहु 24/08/2035 गुरु 12/10/2035 शनि 09/12/2035 बुध 30/01/2036 केतु 20/02/2036	चंद्र 16/03/2036 मंगल 03/04/2036 राहु 19/05/2036 गुरु 28/06/2036 शनि 16/08/2036 बुध 28/09/2036 केतु 15/10/2036 शुक्र 05/12/2036 सूर्य 20/12/2036	मंगल 02/01/2037 राहु 03/02/2037 गुरु 03/03/2037 शनि 06/04/2037 बुध 06/05/2037 केतु 18/05/2037 शुक्र 23/06/2037 सूर्य 04/07/2037 चंद्र 21/07/2037	राहु 12/10/2037 गुरु 24/12/2037 शनि 20/03/2038 बुध 06/06/2038 केतु 08/07/2038 शुक्र 07/10/2038 सूर्य 04/11/2038 चंद्र 19/12/2038 मंगल 20/01/2039	गुरु 26/03/2039 शनि 11/06/2039 बुध 19/08/2039 केतु 17/09/2039 शुक्र 07/12/2039 सूर्य 31/12/2039 चंद्र 10/02/2040 मंगल 09/03/2040 राहु 21/05/2040

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

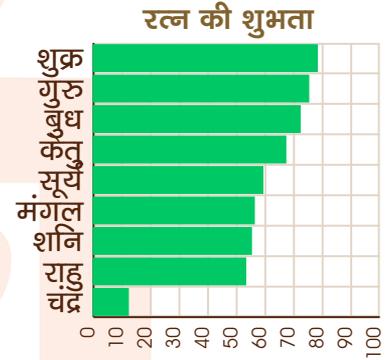
मूलांक	4
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 4, 6, 7
शत्रु अंक	3, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	78%	पराक्रम, सुख, भाग्योदय
पुखराज	गुरु	75%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन, धन
पन्ना	बुध	72%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
लहसुनिया	केतु	67%	दम्पति, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	59%	स्वास्थ्य, दम्पति
मूंगा	मंगल	56%	कम खर्च, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	55%	शत्रु व रोग मुक्ति, कम खर्च, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	53%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
मोती	चंद्र	12%	हानि, शत्रु व रोग



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	19/02/2010	44%	0%	62%	72%	75%	84%	34%	31%	80%
शुक्र	19/02/2030	44%	0%	56%	78%	75%	91%	61%	59%	73%
सूर्य	20/02/2036	72%	25%	62%	72%	81%	66%	34%	31%	55%
चंद्र	19/02/2046	66%	38%	56%	78%	75%	78%	55%	31%	55%
मंगल	19/02/2053	66%	25%	69%	59%	81%	78%	55%	31%	73%
राहु	20/02/2071	44%	0%	38%	72%	75%	84%	61%	66%	55%
गुरु	20/02/2087	66%	25%	62%	59%	88%	66%	55%	53%	67%
शनि	20/02/2106	44%	0%	38%	78%	75%	84%	67%	59%	55%
बुध	21/02/2123	66%	0%	56%	84%	75%	84%	55%	53%	67%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/03/2007-16/07/2007	-----	
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----

### द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----

### तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	-----

### शनि का ढैया फल

#### ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया  
साढ़ेसाती प्रथम ढैया  
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया  
साढ़ेसाती तृतीय ढैया  
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

#### फल

सम  
सम  
शुभ  
सम  
सम

#### क्षेत्र

शत्रु से कष्ट  
व्यावसायिक परेशानी  
धनार्जन  
कम खर्च  
धन

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

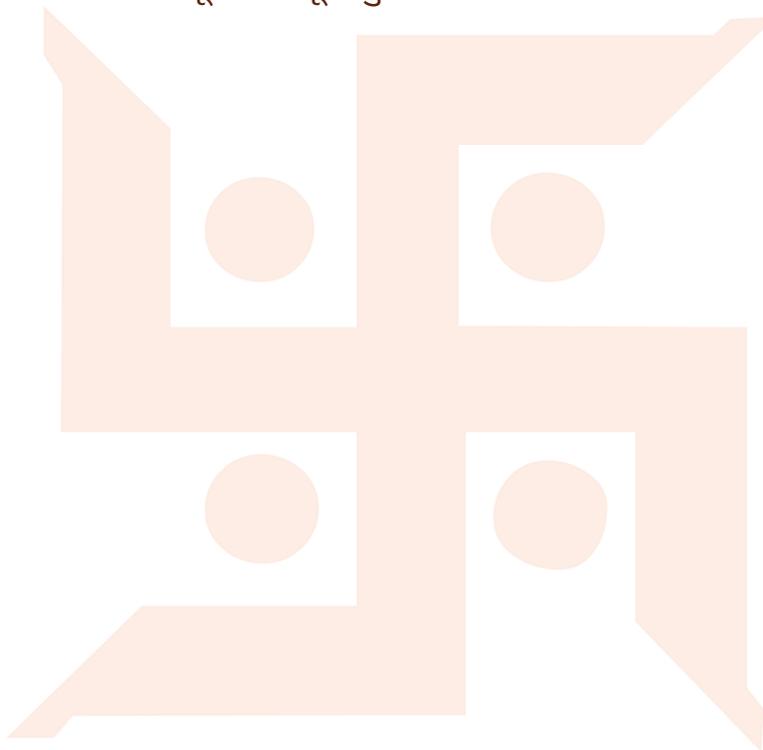
आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति लग्न से द्वादश भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। क्योंकि आपकी कुंडली में यह दोष किसी भी प्रकार से भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आपका व्यय होता रहेगा जिससे यदा कदा अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन यह स्थिति अल्पकालिक रहेगी तथा सामान्यतया आप आर्थिक रूप से सम्पन्न ही रहेंगी। शारीरिक स्वास्थ्य आपका अच्छा रहेगा। यदा कदा मानसिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी आएंगे परन्तु आप उनका सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगी। आपके पति का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी जिससे परस्पर संबंधों में मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त सांसारिक सुखों का उपभोग करने में भी आपको किंचित व्यवधानों के साथ न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होती रहेगी।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में भी किंचित विलम्ब हो सकता है लेकिन इस कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। साथ ही विवाह पूर्व की किसी वार्ता में गतिरोध भी हो सकता है लेकिन विवाह के बाद आपके परस्पर संबंध समान रूप से अनुकूल रहेंगे तथा दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में आप समर्थ होंगी।

जन्म कुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी। परन्तु धनार्जन भी आवश्यक मात्रा में होता रहेगा जिससे इसका दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों का सामना तथा समाधान करने में भी आप समर्थ रहेंगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आत्मबल से आप युक्त रहेंगी जिससे कार्य क्षेत्र में

आप उन्नति प्राप्त करेंगी। षष्ठ भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी। यदा कदा पित या गर्मी से आपको शारीरिक परेशानी की अल्प मात्रा में अनुभूति हो सकती है सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा साथ ही स्वभाव में उग्रता भी रहेगी। आपसी सामंजस्य के द्वारा दाम्पत्य जीवन की मधुरता बनाए रखने में आप समर्थ रहेंगी।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष खत्म हो जाए। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धनऐश्वर्य से युक्त होकर आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश षष्ठ भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में बुध, शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में

खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ग्रह फल

### सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, कोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव रहेगा तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप जीवन में पिता के द्वारा यश अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पिता के द्वारा आपके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान भी रखा जाएगा।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी तथा उनकी सेवा एवं आज्ञा पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथापि यदा कदा अल्प मात्रा में सैद्धान्तिक मतभेद विद्यमान रहेंगे जिससे यदा कदा विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। साथ ही आप जीवन में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

### चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपका यत्नपूर्वक पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। आपके आर्थिक साधनों की अभिवृद्धि में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आप पूर्ण आर्थिक लाभ एवं अन्य प्रकार से सुखार्जन करेंगी।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेंगी एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगी। जीवन में आप हर प्रकार से उनकी सहायता एवं सहयोग भी करेंगी तथा अवसरानुकूल उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा आपसी मतभेद अत्यन्त ही अल्प मात्रा में रहेंगे।

## मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराकामी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा आपके प्रति उनके मन में सम्मान तथा स्नेह का भाव रहेगा। जीवन में उनसे आप पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य क्षेत्र में वांछित सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा वांछित सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह कुछ समय तक रहेगी। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उन्हें अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करती रहेंगी।

## बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

## गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

वृश्चिक राशि में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बलस्वास्थ्य, दुःखी एवं कामुक होता है।

## शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराकमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

## शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

कर्क राशि में शनि हो तो जातक, गरीब, कमसन्तान, बाल्यावस्था में दुखी, मातृरहित, प्राज्ञ, उन्नतिशील, विद्वान्, हठी एवं स्वार्थी होता है।

## राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

## केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र  
( 19/02/2010 - 19/02/2030 )

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 19/02/2010 को आरम्भ होकर 19/02/2030 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र तृतीय भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जिसकी सामान्यतया दो राशियाँ- बृष और तुला हैं। यह मीन राशि में उच्च का तथा कन्या राशि में निम्न का होता है। यह आनन्द, प्रेम-संबंध, स्वाद, फैशन डिजाइनिंग तथा जीवन के आनन्द का द्योतक है। यह आपकी कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है तथा नवम भाव पर इसकी दृष्टि है और इस भाव पर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है।

तृतीय भाव मानसिकता, बुद्धि, साहस, दृढ़ता, छोटे भाई-बहनों, छोटी यात्रा, गमनागमन, पत्राचार, अफवाह, हाथ, गले, कन्धों, हँसली तथा स्नायु तंत्र का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी शुक्र भाव को प्रबलित कर रहा है और इसके फलस्वरूप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करने में साहस की प्राप्ति होगी। आपको कोई बड़ी या मामूली स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और इस दशा के दौरान आपका जीवन सामान्य रहेगा।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र के कारण आपको समृद्धि तथा संपत्ति की प्राप्ति होगी और आपमें कठिनाइयों का सामना करने का साहस उत्पन्न होगा। इस दशा के दौरान आपको कुछ अचल संपत्ति प्राप्त होने की संभावना है और आप भोग-विलास तथा आराम संबंधी वस्तुओं पर व्यय करेंगे। आपको उपलब्धियों की प्राप्ति और संपत्ति की वृद्धि में बाधा आएगी तथा आपके ऊपर ऋण का बोझ पड़ सकता है या नुकसान हो सकता है जिसके लिए आपको आवश्यक सावधानी बरतनी चाहिए।

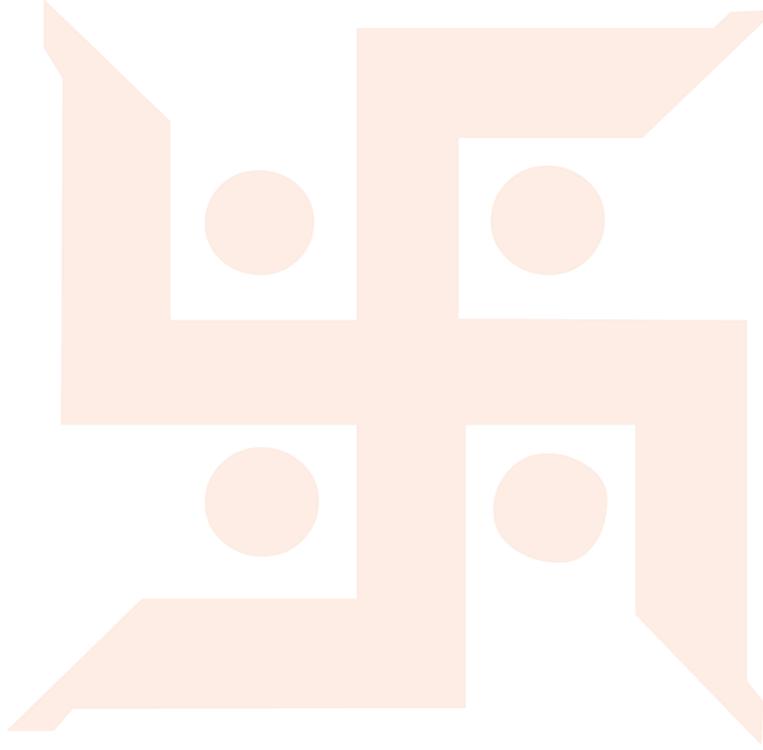
व्यवसाय :

आपकी मानसिक शक्ति अच्छी है इसलिए आप संगीत, गायन, नृत्य और ललित कला का आनन्द लेंगे। आप नाटकीय गतिविधियों या ललित कला से संबंधित गतिविधियों से धनोपार्जन और जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप व्यावसायिक दृष्टि से सुदृढ़ हैं और अपने पिता के व्यवसाय में शामिल हो सकते हैं क्योंकि आपकी जन्म कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित शुक्र की दृष्टि नवम् भाव पर है।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण होगा क्योंकि आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आपको बड़ों का आशीर्वाद मिलेगा किन्तु अपने भाई-बहनों के साथ मतभेद भी

हो सकता है जिससे परिवार में तनाव उत्पन्न होगा।



**अंतर्दशा :- शुक्र - शनि  
( 21/12/2022 - 19/02/2026 )**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 19/02/2010 को प्रारंभ हुई थी और वद 19/02/2030 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 21/12/2022 को प्रारंभ होकर 19/02/2026 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठे भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है।

छठे भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 8, 12, 3 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके भोजन की मात्रा बढ़ जाएगी। अत्यधिक भोजन से बचना श्रेयस्कर रहेगा। आप जिद्दी, झगड़ालू मगर साहसी होंगे। खनन या भवन निर्माण का व्यवसाय लाभप्रद हो सकता है। शनि आयुकारक है। छठे भाव में इसकी स्थिति शुभ मानी जाती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए नौमुखी रुद्राक्ष चांदी में जड़वाकर दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में शनिवार के दिन शिवजी की प्रार्थना और शनि वैदिक मंत्र के जाप के बाद धारण करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - बुध  
( 19/02/2026 - 20/12/2028 )**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 19/02/2010 को प्रारंभ हुई थी और वद 19/02/2030 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 19/02/2026 जो आपके लिए 20/12/2028 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

प्रथम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के 7वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप ज्ञानवान होंगे। ज्ञान में वृद्धि के लिए फिर से अध्ययन प्रारंभ कर सकते हैं। मानसिक उत्कृष्टता और हाज़िर जवाबी में वृद्धि होगी। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 6 रत्ती का पन्ना सोने की अंगूठी में बुधवार के दिन प्रातःकाल मध्यमा अंगुली में प्रार्थना के बाद धारण करें।

**महादशा :- सूर्य  
( 19/02/2030 - 20/02/2036 )**

सूर्य की महादशा 19/02/2030 को आरंभ और 20/02/2036 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य लग्न में स्थित है। सूर्य स्वास्थ्य, पिता, आत्मा, राजकीय सम्मान का प्रतिनिधित्व करता है जबकि प्रथम भाव चरित्र, स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और सुख का द्योतक है। अतः इस दशा में आपका स्वास्थ्य, सम्पत्ति, शक्ति तथा प्रभुत्व उत्तम होंगे।

**स्वास्थ्य :**

आपका स्वास्थ्य इस दशा में उत्तम रहेगा। किन्तु, शरीर में अत्यधिक ताप होने के कारण आप खसरा आदि संक्रामक रोगों के शिकार हो सकते हैं। अन्यथा आप हृष्टपुष्ट और शक्तिशाली रहेंगे।

**सम्पत्ति :**

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी और आप धनी तथा समृद्धिशाली होंगे। आप अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करेंगे और अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आप धन तथा जीवन के सारे सुखों से सम्पन्न होंगे। आपको आपके पिता से लाभ हो सकता

है।

**व्यवसाय :**

आप इस दशा में यश और ख्याति प्राप्त करेंगे। आप अपने कार्यों में सफल होंगे और इच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त करेंगे। नौकरीपेशा लोगों के कार्य में परिवर्तन हो सकता है। आपको कुछ अप्रत्याशित लाभ हो सकता है या आपका स्थानान्तरण अथवा कार्य-स्थान में परिवर्तन हो सकता है। आप प्रशासनिक कार्यों, व्यापार अथवा सरकारी कार्यों में बहुत अच्छा कर सकते हैं। आपमें प्रशासकीय योग्यता तथा अथक परिश्रम की क्षमता है। आप चिकित्सा तथा लेखा, कोषागार आदि से संबन्धित कार्यों का सुन्दर संचालन कर सकते हैं। आप बड़ी संस्थाओं, निगमों आदि के प्रबंधक, निदेशक, विक्रय-प्रबंधक आदि के लिए अत्यन्त योग्य हैं। सोने, तांबे तथा रत्नों का व्यवसाय आपके लिये उपयुक्त है।

**परिवार (कुटुम्ब) :**

आपको आपकी सन्तानों से सुख मिलेगा। आपके परिवार में किसी शिशु का जन्म हो सकता है। दाम्पत्य जीवन में कुछ तनाव हो सकते हैं जिन पर धैर्य तथा सहिष्णुता से नियंत्रण किया जा सकता है। आपकी माता प्रभावशाली होंगी और उन्हें सट्टे तथा निवेश से लाभ का सुअवसर मिलेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को आर्थिक लाभ होगा जबकि बड़ों को कठिन परिश्रम करना होगा। किन्तु उन्हें शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी तथा वे संवादपटुता आदि से लाभ प्राप्त करने में सफल होंगे।

**शिक्षा :**

आपकी योग में रुचि रहेगी और आप धार्मिक प्रवचन करेंगे या उनकी व्यवस्था करेंगे। आपकी राजनीति में रुचि हो सकती है। आप में विभिन्न सामाजिक व राजनीतिक कार्यों के आयोजन की अद्भुत क्षमता है। आपके उग्र स्वभाव के कारण आपकी अन्यों के साथ शत्रुता हो सकती है, हालाँकि आप दयालु-हृदय हैं।

**अंतर्दशा :- सूर्य - सूर्य**  
**( 19/02/2030 - 09/06/2030 )**

आपके लिए सूर्य की महादशा 19/02/2030 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 09/06/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप प्रभावशाली, सक्रिय और उद्यमी होंगे। आप महत्वाकांक्षी हैं और सत्ता से अनुराग रखते हैं। इस अंतर्दशा में आप अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने में सफल होंगे और नाम भी खूब कमाएंगे। नेतृत्व शक्ति के कारण आपका सम्मान होगा। न्यायप्रिय होने के कारण आप प्रशंसा प्राप्त करने योग्य कार्य करेंगे जिनसे आपके व्यक्तित्व का विकास होगा। प्रसन्नचित रहने और आशावादी दृष्टिकोण के कारण आपकी लोकप्रियता में वृद्धि होगी।

पिता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। उनकी जायदाद में वृद्धि होगी। माता की लोकप्रियता बढ़ेगी और उन्हें सब कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। आपके भाई-बहनों के धन में वृद्धि होगी। आपकी संतान शिक्षा में यश प्राप्त करेगी। सूर्य की सप्तम भाव पर दृष्टि के कारण दांपत्य जीवन में कुछ मतभेद संभव हैं मगर इनका समाधान धैर्य और सहनशीलता द्वारा हो सकता है। भागीदारों के साथ भी कुछ मतभेद पनप सकते हैं। राजनीति में भाग लेने वालों के लिए समय उत्तम है।

इस अंतर्दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पित्तविकार, सिरदर्द और कार्यक्षमता में कमी आदि से कष्ट संभव है। इन सब से बचने के लिए गायत्री मंत्र का जाप लाभदायक रहेगा।

**अंतर्दशा :- सूर्य - चन्द्र**  
**( 09/06/2030 - 09/12/2030 )**

आपकी सूर्य की महादशा 19/02/2030 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 09/12/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा में आप धन और सुख-सुविधाओं से युत रहेंगे। आपका मान-सम्मान और ओहदा ऊंचा होगा। महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। वरिष्ठ लोगों से आपके संबंध बनेंगे जो लाभदायक होंगे। आपके कार्यों की प्रशंसा होगी। स्त्रियों से संबंधित व्यवसाय में लाभ होगा। व्यवसाय या सरकार के माध्यम से आय होगी। कला और साहित्य में रुचि बढ़ेगी।

आपके सबसे बड़े पुत्र/पुत्री का भाग्य उत्तम रहेगा। किसी संतान का विवाह हो सकता है। छोटे भाई-बहन भाग्यशाली होंगे।

माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। पिता की छोटी यात्राएं हो सकती हैं, मातहत सहयोग करेंगे, महिलाओं से प्रतिस्पर्धा हो सकती है। आपके मामापक्ष के लोगों को सबका

सहयोग मिलेगा। उन्हें ऋण भी प्राप्त हो सकेगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छोटी मोटी शिकायतें हो सकती हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए श्वेत वस्तुओं का दान करें।

**अंतर्दशा :- सूर्य - मंगल  
( 09/12/2030 - 16/04/2031 )**

आपकी सूर्य की महादशा 19/02/2030 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 16/04/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में उत्साह और पहल करने में उत्तम होने के कारण आपको उच्च पद प्राप्त हो सकता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना होगा। आपके शत्रु और विरोधी पनप नहीं सकेंगे और आप से परास्त होंगे। जीवनसाथी और व्यापार के साझेदार की देखभाल जरूरी है क्योंकि उनको कोई बीमारी हो सकती है। आपकी कोई दूरस्थ स्थान की या विदेश यात्रा हो सकती है। भाई-बहनों के साथ संबंध मधुर रहेंगे।

आपकी संतान को अचल संपदा प्राप्त हो सकती है। अगर वे सेवारत हैं तो जायदाद की खरीद/बेच कर सकते हैं। माता की यात्रा हो सकती है। पिता को जायदाद, सत्ता और अधिकार प्राप्त हो सकते हैं। छोटे भाई-बहन अपने कार्यस्थल पर सक्रिय रहेंगे। सेवारत जातकों को प्रोन्नति और धनलाभ प्राप्त होंगे। परामर्शदाताओं के जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकता है। व्यापारीगण सौभाग्यशाली रहेंगे और धनसंचय करेंगे। नेत्ररोग, पैरों की चोट, ज्वर आदि से बचाव करें। अशुभत्व से रक्षा के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।